(ii) CLOSURE OF SWADESHI COTTON MILLS, KANPUR

श्री मनोहर लाल (कानपुर) : अध्यक्ष महोदय, जिस तरह से बागड़ी साहब ने काश्तकारों की एक गंभीर समस्या की तरफ आपका ध्यान आकर्षित किया है बिलकुल उसी तरह से मैं कानपुर की एक समस्या की तरफ ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। स्वदेशी काटन मिल कानपुर में है और एक बहुत ही दुखद घटना वहां की है जिसकी तरफ मैं आपका और सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। विगत दो मास पहले स्वदेशी काटन मिल के मजदूरों को तनख्वाह पांच छः महीने से नहीं मिल रही थी। उन लोगों ने वहां के अधिकारियों का घेराव किया। दो बार घेराव हुआ, तीन बार घेराव हुआ। वहां की लेबर पार्टीज़, डी० एम० और बाकी सब लोगों ने मैनेजमेंट से मिल कर यह तय करवा दिया कि दीवाली तक सारी तनख्वाह बांट दी जायेगी। लेकिन वहां पर तनख्वाह नहीं बंटी। जब तनख्वाह नहीं बंटी और चार बार यह हो चुका, 6 महीने की तनख्वाह नहीं बंटी तब मजदूरों ने फिर घेराव किया। उसमें गोलीकाण्ड हुआ। उस गोलीकांड में उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार ने यह घोषित किया है कि 12 मजदूरों की मृत्यु हुई है। लेकिन गोलीकांड हो जाने के बाद हालत यह है कि लगभग 200 औरतें ऐसी आज वहां घूम रही हैं जिन्होंने न तो अपनी चूड़ियां फोड़ी हैं न अपनी मांग का सिंदूर पोंछा है क्योंकि उन मजदूरों का कहीं पता नहीं चल पा रहा है। न तो वे मजदूर जिलों के अंदर हैं न उन मजदूरों ने मिल में जाकर अपनी तनख्वाहें ली हैं। कानपुर के श्रमिक जगत में इससे एक बहुत बड़ा असंतोष फैला हुआ हैं और उन 200 श्रमिकों का कहीं पता नहीं है। यह संभावना है कि वे 200 श्रमिक गोलीकांड में मारे गये। उत्तर प्रदेश की सरकार ने यह घोषित किया है कि सिर्फ 12 मजदूर मारे गये हैं लेकिन सब लोगों को डाउट है और मुझे भी डाउट है, मेरे क्षेत्र का यह मामला है। वहां जो विधवाएं घूम रही हैं जिन्हें न तो हम विधवा कह सकते हैं न यही कह सकते हैं कि वे विधवा नहीं हैं लेकिन उनके घर वालों का कहीं पता नहीं है। वे मजदूर जेलों के अंदर भी बन्द नहीं हैं। आज हालत यह है कि आठ हजार मजदूर मिल बन्द होने की वजह से बेकार हो गये हैं। आठ हजार मजदूर उस मिल में काम करते हैं। उस मिल के जो मालिक हैं वे इस पर उतारू हैं कि हम इस मिल को नहीं चालू करेंगे और इसको वहां से उठा कर दूसरी जगह ले जायेंगे। हम चाहते हैं कि भारत सरकार इस मिल का अधिग्रहण करे और अधिग्रहण करके इसको चालू किया जाये क्योंकि यह सिर्फ 8 हजार मजदूरों का ही सवाल नहीं है, 20 हजार के करीब उनके परिवार से संबंधित लोगों का भी सवाल है जिन्हें भुखमरी का सामना करना पड़ रहा है। कानपुर में ही नहीं बल्कि सारे उत्तर प्रदेश के अंदर यह श्रमिक अशांति फैली हुई है। मैं आपके माध्यम से भारत सरकार का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि उस मिल को शीघ्रातिशीघ्र चालू किया जाये और वह मजदूर जिनका कोई पता नहीं है उनके बारे में सारी बात स्पष्ट की जाये कि केवल 12 मरे हैं या 200 मजदूर जिनका कोई पता नहीं है वे भी मारे गये हैं। कानपुर में मिल के पास ही एक मन्दिर है जहां रोज 200 औरतें इकट्ठा होकर सामूहिक रूप से अपने आदमियों के लिए प्रार्थना करती हैं और विलाप करती हैं। मैं चाहता हूं वह मिल जल्दी से जल्दी चालू की जाये और जो मजदूर गायब हैं उनका पता लगाया जाये। उत्तर प्रदेश की यह एक ऐसी घटना है जो अन्यत्र कहीं भी देखने को नहीं मिलेगी। यह समस्या बड़ा गम्भीर रूप धारण करती जा रही हैं। जिस प्रकार से किसानों में जूट को लेकर बड़ा असंतोष है उसी प्रकार से मजदूरों में वहां असंतोष फैला हुआ है। हम चाहते हैं जिनके कारण इस प्रकार की घटना हुई हैं उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाये।